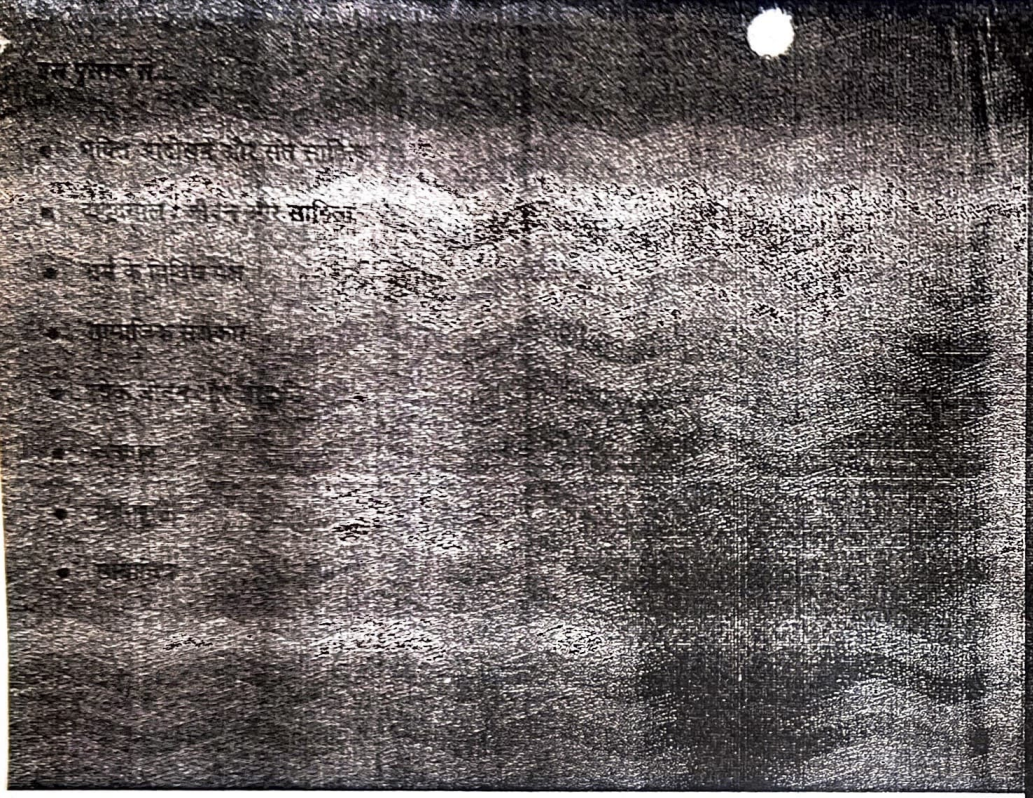

संत दादूदयाल

जीवन और साहित्य

संत दादूदयाल : जीवन और साहित्य

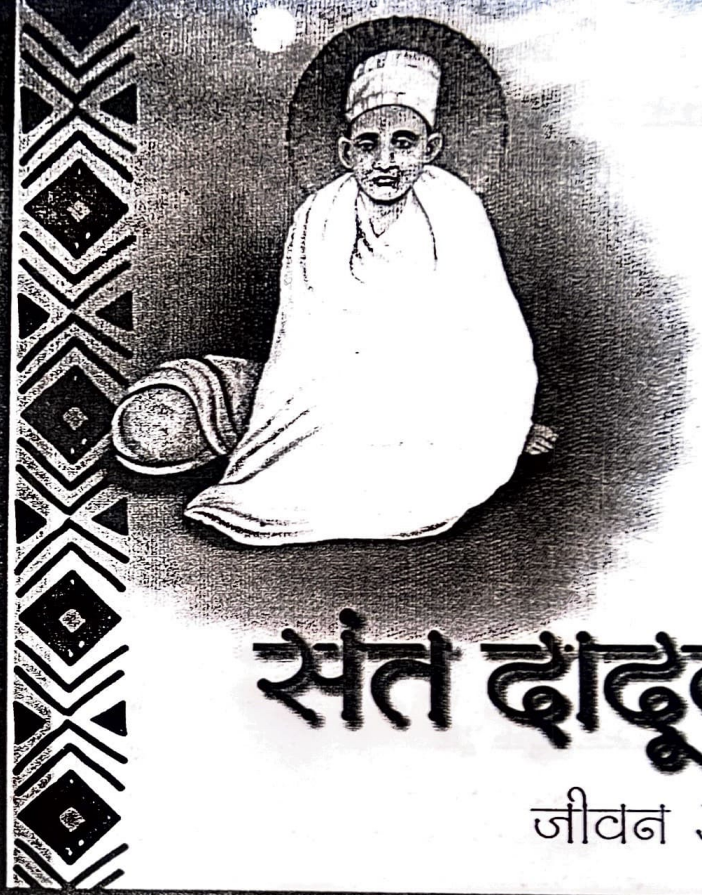

डॉ. नवीन नन्दवाना

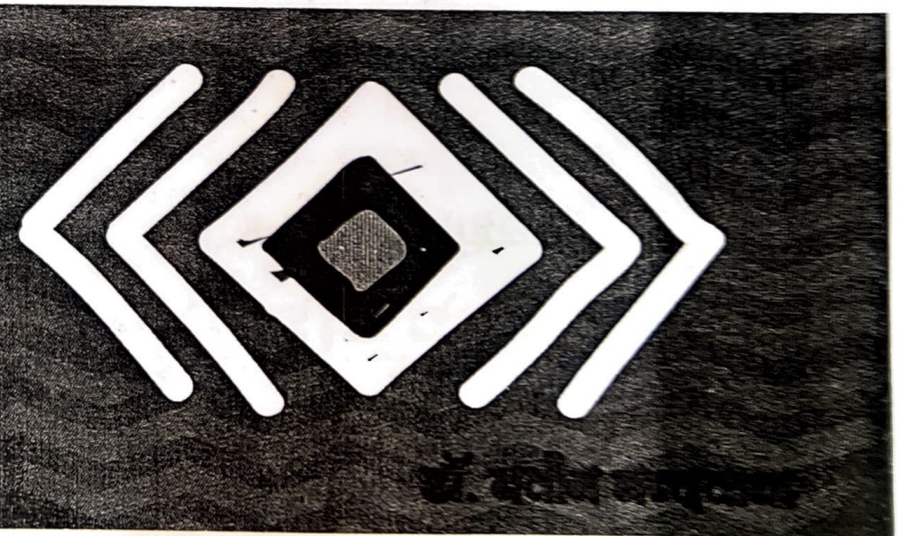

मलिक एण्ड कम्पनी
(स्थापित 1950)
337, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
प्रधान कार्यालय
23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
www.nphbooks.com

ISBN 978-81-7998-187-0

संत दादूदयाल

जीवन और साहित्य

डॉ. नवीन नन्दवाना

272

M

मलिक एण्ड कम्पनी

जयपुर • दिल्ली

ISBN 978-81-7998-187-0
प्रथम संस्करण : 2018
© लेखक

□

मूल्य : ₹ 350

□

प्रकाशक
मलिक एण्ड कम्पनी
337, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
फोन : 0141-2575254, 2575258
ई-मेल : malikbooks337@yahoo.in

□

प्रधान कार्यालय
23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
फोन : 011-23274161, 23275267

□

टाइप सैटिंग
नेशनल कम्प्यूटर्स, जयपुर

□

मुद्रक
विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

स्व. पिताजी
को
सादर समर्पित!

273

ईश्वर तत्त्व को विशिष्ट प्रकार से जनमानस तक पहुँचाया था। दादू ने खंडन की अपेक्षा मंडन एवं विरोध की अपेक्षा सद्भाव-सहभाव पर अधिक बल दिया।

'संत दादूदयाल के साहित्य में धर्म' पर चिंतन करते हुए हम दादू साहित्य में वर्णित धर्म के व्यापक स्वरूप को देख सकते हैं। दादू के काव्य में धर्म के क्रियात्मक एवं प्रतिक्रियात्मक दोनों पक्ष द्रष्टव्य होते हैं। क्रियात्मक पक्ष के अन्तर्गत गुरु महिमा, अहिंसा, सत्संगति, मन:परिष्कार, सदाचरण, निष्काम कर्म और समर्पण आदि भावों को केंद्रित करते हुए संत दादूदयाल ने अपने विचारों की सरिता को प्रवाहित किया है जबकि प्रतिक्रियात्मक स्वरूप जैसे धार्मिक आडम्बरों का विरोध, मूर्तिपूजा का खंडन, अवतारवाद में अविश्वास और बहुदेववाद का खंडन आदि विषयों को केन्द्र में रखकर भी दादू ने अपने काव्य के माध्यम से तत्कालीन समाज को जागृत करने का व्यापक प्रयास किया।

संत दादूदयाल का साहित्य सामाजिक सरोकारों को भी सशक्त अभिव्यक्ति देता है। हमारे संत सुधारक का कार्य भी करते थे। इसी दायित्व को निभाते हुए अन्य संतों की भाँति संत दादूदयाल ने भी अंधविश्वासों, आडम्बरों का खंडन करते हुए समाज में फैली गैर बराबरी का भी विरोध किया। संत दादूदयाल की सद्भाव व सहभाव विषयक मान्यताओं के साथ-साथ उनके साहित्य में वर्णित जीवन मूल्यों को भी हम उनकी साखियों व पदों के माध्यम से जान सकते हैं। संतों का लोक जीवन से सीधा जुड़ाव था। वे अपने संदेश को भारतीय लोक जीवन तक पहुँचाना चाहते थे अत: उनकी कविता की भाषा लोक जीवन के सर्वाधिक निकट होती थी। दादू साहित्य में भी हम लोकभाषा के साथ-साथ विविध रीति-रिवाजों, परम्पराओं, उत्सव-पर्व की संस्कृति, लौकिक विश्वासों एवं जनजीवन में प्रचलित लोकोक्तियों व मुहावरों की महक महूसस कर सकते हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से दादू के जीवन और साहित्य को समग्र रूप से मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में दादू की कविता के विविध उद्धरण आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'दादूदयाल', वेलवीडियर प्रेस से प्रकाशित 'दादूदयाल की बानी', डॉ. बलदेव वंशी द्वारा संपादित 'दादू ग्रंथावली', स्वामी भूरादास की 'श्री दादूदयाल बाणी' और स्वामी नारायणदास जी की 'श्री दादूवाणी' से लिए गए हैं। मैं इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखकों की पुस्तकों से भी विविध मतों को उद्धृत किया है, मैं उन सभी के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के माध्यम से दादू साहित्य के विविध पक्षों को सम्यक् रूप से विवेचित करने का प्रयास किया गया है। आशा है यह पाठकों व संत साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

—नवीन नन्दवाना

ॐ

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	*vii*
	अपनी बात	*ix*
1.	भक्ति आंदोलन और संत साहित्य	1
2.	दादूदयाल : जीवन और साहित्य	38
3.	धर्म के विविध पक्ष	66
4.	सामाजिक सरोकार	99
5.	लोक जीवन और संस्कृति	126
	अवदान	142
	ग्रंथ-सूची	149
	▪ *छायाचित्र*	152

274